अम्बाविजय स्तुति
शिवविजय स्तुति
हरिविजय स्तुति

प्रणेता
आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

AACHARYASHRI.IN

अम्बाविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

कहाँ जाऊँ मैया चरणकमलों से भटकता
यही तो पुत्रों का परमधन एकत्रित हुआ।
महाविष्णु ब्रह्मा शिव प्रभृति का साधन बना
जिसे पाने हेतु परिचरण में सिद्ध रहते॥

जहाँ बैठे मैया गणपति महासेन दिखते
वहाँ मेरी शक्ति गमन करने हेतु न रही।
न मैं देखा जाऊँ सफलतम भागी चरण का
धरित्री में छूटे चरण कृत चिह्नों पर रहूँ॥

AACHARYASHRI.IN

अम्बाविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

न मैं भागी होता शरणगत की ही शरण में
रहूँ ये ही वांछा मुझ अधम की और बचती।
न मैं भागी हूँ तो जननि अपना वांछित कहो
कहाँ का भागी हूँ चरण अनुरागी नित रहूँ॥

सपर्या का भागी यदि अधम को आप न कहें
कृपा पाने माँ की शिवभगति में मैं रत रहूँ।
उन्हे भी ना मानें गणपति पदों में लिपटता
न मानें तो मैया जननि शरणों के पद पड़ूँ॥

AACHARYASHRI.IN

अम्बाविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

न मैं ज्ञानी ध्यानी विबुध अनुगामी न रहता
सदा तन्द्रा में भी दुरित दयितों की गति रही।
अवघों के संगी गुरु चरण रंगी न बनते
तुम्ही पापी की भी कलुष शमनी शोक हरणी॥

तुम्ही दाक्षांगी ने अवघट तटी स्वीकृत किया
तुम्ही ने दैत्यों को नित शरण का ही वर दिया।
न तो मैं हू ही "कौशल"पति पड़ूँ युक्ति चुनने
तुम्हारी वीरांगी सुरत करुणांगी विजय हो॥

AACHARYASHRI.IN

शिवविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

कहाँ जाऊँ शंभो चरणकमलों से भटकता
यही तो भक्तों का परमधन एकत्रित हुआ।
महाविष्णु ब्रह्मा रवि प्रभृति का साधन बना
जिसे पाने हेतु परिचरण में सिद्ध रहते॥

जहाँ बैठे शम्भु गणपति महासेन दिखते
वहाँ मेरी शक्ति गमन करने हेतु न रही।
न मैं देखा जाऊँ सफलतम भागी चरण का
धरित्री में छूटे चरण कृत चिह्नों पर रहूँ॥

AACHARYASHRI.IN

शिवविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

न मैं भागी होता शरणगत की ही शरण में
रहूँ ये ही वांछा मुझ अधम की और बचती।
न मैं भागी हूँ तो गिरिश अपना वांछित कहो
कहाँ का भागी हूँ चरण अनुरागी नित रहूँ॥

सपर्या का भागी यदि अधम को आप न कहें
कृपा की इच्छा से भगति गिरिजा की नित करूँ।
उन्हे भी ना मानें गणपति पदों में लिपटता
न मानें तो स्वामी गिरिश शरणों के पद पड़ूँ॥

AACHARYASHRI.IN

शिवविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

न मैं ज्ञानी ध्यानी विबुध अनुगामी न रहता
सदा तन्द्रा में भी दुरित दयितों की गति रही।
अवघों के संगी गुरु चरण रंगी न बनते
तुम्हे ध्याते जो भी स्मरहर कहाँ पाप रहते॥

तुम्ही शूली ने तो विशद विष को स्वीकृत किया
विहंगी चक्री को अजित पद से भूषित किया।
तुम्ही घोरी हो "कौशल" तुम अघोरी स्मरण से
तुम्हारी हे आशीविष करुण पाशी विजय हो॥

AACHARYASHRI.IN

हरिविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

कहाँ जाऊँ स्वामी चरणकमलों से भटकता
यही तो दासों का परमधन एकत्रित हुआ।
महादेव ब्रह्मा रवि प्रभृति का साधन बना
जिसे पाने हेतु परिचरण में सिद्ध रहते॥

सभी की वांछा जो ध्रुव पद सदा इच्छित रहे
वहाँ मेरी शक्ति प्रतियतन की भी न रहती।
न मैं देखा जाऊ सफलतम भागी चरण का
धरित्री में छूटे चरण कृत चिह्नों पर रहूँ॥

AACHARYASHRI.IN

हरिविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

न मैं भागी होता शरणगत की ही शरण में
रहूँ ये ही वांछा मुझ अधम की और बचती।
न मैं भागी हूँ तो अजित अपना वांछित कहें
कहाँ का भागी हूँ चरण अनुरागी नित रहूँ॥

सपर्या का भागी यदि अधम को आप न कहें
कृपा की इप्सा से जलधितनया भक्ति करता
उन्हे भी ना मानें मुखद्विज पदों में लिपटता
न मानें तो स्वामी पुरुष शरणों के पद पड़ूँ॥

AACHARYASHRI.IN

हरिविजय स्तुति

आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी

न मैं ज्ञानी ध्यानी विबुध अनुगामी न रहता
सदा तन्द्रा में भी दुरित दयितों की गति रही।
अवघों के संगी गुरु चरण रंगी न बनते
तुम्हे जानूँ पापी कलुषित जनों के ऋण रिपु॥

तुम्ही राजीवी ने द्विरत सम को स्वीकृत किया
तुम्ही ने सिद्धों से दितिज शिशु को वन्दित किया।
तुम्हारे वैरी "कौशल"पति कहाँ पालक विभो
तुम्हारी हे पत्रीरथ भुजगछत्री विजय हो॥

AACHARYASHRI.IN